साध्वीप्रमुखा के 40वें चयनदिवस पर मनमोहक प्रस्तुतियां

असफल होने पर ही सफलता के द्वार खुलते हैं।

राजलदेसर। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के 40वें चयन दिवस से पूर्व रात्रि में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के सान्निध्य में एक रोचक और नये प्रयोग का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें 'तुलसी प्रबोध' को विषय बनाकर नये युग की साध्वियों ने स्वस्थ प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस रचनात्मकता उपक्रम में तीस साध्वियां और समणियां प्रतिभागी बनी। प्रतियोगिता में 5 राउण्ड रखे गये। जिनमें संकेत, शब्द, एक्शन, अर्थ आदि के आधार पर अलग–अलग तरीके से प्रतिभागियों से प्रश्न पूछे गये। दर्शकों के लिए भी आशुभाषण, दिमागी पहेलियां, रजोहरण बांधने की प्रतियोगिता आदि विविध रोचक कार्यक्रम रखे। पाँच ग्रुप में से प्रथम स्थान 'दस्तक शब्दों की' तथा 'बहता पानी निर्मला' ग्रुप ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वी सुमतिप्रभा ने किया। प्रतियोगिता का संचालन साध्वी स्वस्तिकप्रभा एवं साध्वी जिनयशा ने किया। लगभग 2 घंटे तक चलने वाली इस प्रतियोगिता ने दर्शको को भी आनन्द से सराबोर कर दिया। प्रतिभागी साध्वियों का उत्साह वर्धन करवाते हुए महाश्रमणीजी ने 13–13 कल्याणक पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा ने कहा – नैतिक और मानवीय मूल्यों की, अध्यात्म की, धर्म की शिक्षा किशोर और युवा पीढी को कैसे मिले, कैसे उनको जोड़ा जा सके, प्राचीन साहित्य को जनता तक कैसे पहुँचा सकते हैं, इसके लिए नये–नये प्रभावी तरीके काम में लेने होंगे, तभी हमारी सफलता निश्चित होगी।

उन्होंने कहा – छोटी–छोटी नई साध्वियों में जो ज्ञानक्षमता, प्रस्तुतिकरण की कला है, वह सराहनीय है। आज की पीढी में ज्ञान के बीज का वपन कर सके, इसके लिए हमें कड़ा कार्य करना होगा। प्रतियोगिता के विषय में उन्होंने कहा – मेरी दृष्टि में प्रतियोगिता में हार या जीत का जितना महत्व नहीं, उतना महत्व उसमें निखार आने का है। असफल होने पर ही उसमें सफल होने के गुण प्राप्त हो सकते हैं। असफल होने पर ही सफलता के द्वार खुलते हैं।

साध्वीप्रमुखा की व्यवस्था बड़ी महत्वपूर्ण – आचार्य महाश्रमण

दूसरे दिन सूर्योदय से बहुत पहले ही अर्थात् ब्राह्ममुहुर्त से ही, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के 40वें चयनदिवस पर गीतों की स्वर लहरियां गूंजने लग गई थी। तत्पश्चात् सूर्योदय के पश्चात् साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का 40वां चयनदिवस आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में नाहर भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर आचार्यप्रवर ने कहा – मैं तो जयाचार्य को कृतज्ञता के भाव के साथ याद कर रहा हूँ। उनका अवदान है साध्वीप्रमुखा की व्यवस्था। अवश्य ही उनके सामने अपेक्षा रही होगी कि साध्वीप्रमुखा का होना आवश्यक है और आज के सन्दर्भ में और ज्यादा आवश्यक है। जयाचार्य ने सुन्दर रास्ता निकाला और साध्वी सरदारांजी को नियुक्त किया। नया काम कुछ कठिन होता है। संघ में उसको जमाना बिठाना होता है। वह काम जयाचार्य ने बखूबी किया। साध्वीप्रमुखा की परम्परा आगे बढी। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा गुरु तुलसी का अवदान है। आप गुरु तुलसी के सान्निध्य में 26 वर्षों तक, आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में 13 वर्षों तक रही। इस मायने में मैं भाग्यशाली हूँ जो तपी–तपायी साध्वीप्रमुखा मुझे मिली है। साध्वीप्रमुखा की व्यवस्था बड़ी महत्वपूर्ण है। अकेले आचार्य के लिए व्यवस्था बड़ा कठिन कार्य है। साध्वीप्रमुखा इसे पूर्ण जिम्मेदारी और सजगता से निभा रही है जो अपने आप में महान् है।

साध्वीप्रमुखा ने चार दशकपूर्व की स्मृति करते हुए कहा – पत्थर अनगढ होता है। वह कुशल शिल्पी के हाथ में आकर एक सुन्दर प्रतिमा का रूप धारण कर लेता है। मैं जो भी हूँ कुशल शिल्पी गुरुदेव तुलसी की कृति हूँ। गुरुदेव के संकल्प की सफलता ही मानती हूँ कि मैं इस रूप में आज यहां हूँ। आपका आशीर्वाद मिले कि मैं आपकी अपेक्षाओं में सफल बन सकूं। आपका यह साध्वीसमाज संघ, गुरु के प्रति समर्पित है, विनीत है। आप जिस रूप में देखना चाहते हैं उस रूप में एक रेखाचित्र प्रस्तुत करें, ताकि हम उसमें रंग भरके आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें। ज्ञान की उपासना से आत्म–निष्ठ बन सकें। पंचाचार की उपासना से सभी आचारवान् बने।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा – जो खोता है उसका भाग्य सोता है, जो बैठता है उसका भाग्य बैठता है, जो खड़ा होता है उसका भाग्य भी खड़ा होता है परन्तु जो चलता है उसका भाग्य गतिशील बना रहता है। भाग्य को निर्मित करने वाला महत्वपूर्ण घटक है पुरूषार्थ। साध्वीप्रमुखाश्री की 50 वर्षों की कहानी पुरूषार्थ की कहानी है। आपका पुरुषार्थ एक दिशागामी नहीं बल्कि विविध दिशागामी है। कोई महिला या साध्वी न होगी जिसने इतना–इतना काम धर्मसंघ के विकास हेतु किया हो।

मुनि सुमेरमल ने कहा – दो विरोधी बातें एक तरफ ज्ञान–विकास दूसरी तरफ समर्पण का विकास। जहां ज्ञान वहां समर्पण की बात कम समझ में आती है। ज्ञान के साथ तर्क जुड़ा है। लेकिन साध्वीप्रमुखा में ज्ञान के साथ समर्पण बेजोड़ है। हमारा धर्मसंघ का इतिहास समर्पण का इतिहास रहा है।

मुनि सुखलाल ने कहा – आचार्य तुलसी के विभिन्न आयामों में एक आयाम नारी समाज की प्रतिष्ठा साध्वियों के प्रति उनके मन में उच्छल भाव था। उसका संवाहक बनाने हेतु चयन हुआ साध्वीप्रमुखा का। आपकी सेवा इतिहास का पृष्ठ बनेगी।

साध्वी राजीमती ने कहा – साध्वीप्रमुखा का इतिहास बेजोड़ है। वर्तमान में युगानुरूप साध्वीप्रमुखा आचार्य तुलसी ने हमें दी। आप महनीय हैं।

इस अवसर पर मुनि रविन्द्रकुमार, मुनि बालचन्द, मुनि विमलकुमार, मुनि विजयकुमार, साध्वी कमलश्री, साध्वी प्रज्ञावती, साध्वीशुभप्रभा, साध्वी ऋतुयशा, साध्वी आस्थाप्रज्ञा, साध्वी दिव्ययशा, साध्वी सुमतिप्रभा, साध्वी कान्तप्रभा, साध्वी संकल्पप्रभा, साध्वी संवेगश्री, साध्वी कमलप्रभा, साध्वी वृन्द, समणी वृन्द, मुनि वृन्द आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

विश्वास के अभाव में जीवन नहीं जीया जा सकता

– साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा – पूज्य कालूगणी ने साहस किया, उससे भी अधिक साहस किया आचार्य तुलसी ने जिन्होंने 30 वर्ष की अवस्था वाली साध्वी को साध्वियों की व्यवस्था का जिम्मा सौंपा। कल की छोरी क्या नेतृत्व करेगी ? पर आचार्य तुलसी की कृपा–अनुकम्पा से आज मैं इस स्थिति में हूँ। दोनों आचार्य द्वारा मेरा निर्माण हुआ।

उन्होंने कहा – विकास के नये क्षितिजों का उद्घाटन साध्वी लाडांजी के समय से हुआ। लाडांजी की भावना थी कि साध्वियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहें। मैं ऐसा मानती हूँ कि मुझे इन सबका योग मिला पर लाडांजी का कम मिला।

उन्होंने कहा – कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा, किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए प्लानिंग करो। मुख्य प्लानिंग के साथ वैकल्पिक प्लानिंग भी होनी चाहिए। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करेंगे, जीवन को जीना शुरु करेंगे तो और अधिक सफल होंगे।

उन्होंने कहा भोजन, पानी, श्वास के बिना जीया जा सकता है लेकिन विश्वास के अभाव में जीवन नहीं जीया जा सकता। मुझे आचार्यों के साथ–साथ साधु–साध्वियों का पूरा विश्वास मिला। उन्होंने आगे कहा प्रयत्न करने से सफलता निश्चित मिलती है। पूरी ईमानदारी से कोशिश नहीं करने से क्षमताएं दब जाती है। अपनी क्षमता, शक्ति का उपयोग करें तो निश्चित रूप से हमारा धर्मसंघ और अधिक ऊँचाईयों को छू सकता है। अपेक्षा है हम अपनी क्षमताओं का, शक्तियों का, समय का नियोजन करना सीखें तो हम और अधिक ऊँचाईयों को छू सकते हैं। आप मेरे भरोसे को और मैं आपके भरोसे को समझने का प्रयत्न करें तो सम्भवतः धर्मसंघ को और अधिक ऊँचाईयां प्रदान कर सकेंगे।

इस अवसर पर कन्या मण्डल की प्रियंका चिण्डालिया, विजयलक्ष्मी बेगवानी, नित्तल बरड़िया, योगिता दुगड़, विनीता बुच्चा ने बेस्ट महिला अवार्ड की संवाद के रूप में रोचक प्रस्तुति दी।

अध्यात्म समवसरण
आचार्य महाश्रमण

अध्यात्म समवसरण